एसपीए ने जुटाया ट्रैफिक का रियल टाइम डेटा

बीआरटीएस को मेट्रो के हिसाब से करें री-डिजाइन

पीक ऑवर्स में ट्रैफिक मैनेजमेंट

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड मैनेजमेंट (एसपीए) भोपाल ने शहर में पीक ऑवर्स ट्रैफिक को मैनेज करने के लिए रीयल टाइम डेटा कलेक्ट किया है। इसकी एक रिपोर्ट एकेडमिक डिस्कस के लिए भी तैयार की गई है। इसके मुताबिक- रोड जेमेस्ट्री, पार्किंग, हैवी व्हीकल मैनेजमेंट और बीआरटीएस के रिवाइवल पर ध्यान दिया जाए, तो शहर का ट्रैफिक मैनेजमेंट बेहतर किया जा सकता है।

सुझाव...

- बीआरटीएस की बसों के रूट को रीडिजाइन करें।
- पार्किंग का इस्तेमाल ट्रैफिक मैनेजमेंट के हिसाब से हो।
- मेट्रो और बीआरटीएस हों परपेंडिकुलर।
- अलग-अलग टाइम स्लॉट में हो ऑफिस टाइमिंग।
- हैवी व्हीकल्स के लिए शहर में बने टर्मिनल्स।

ये ऑपरेशनल चैलेंजेज, जिन पर काम होना जरूरी

एसपीए भोपाल में ट्रैफिक एंड ट्रांसपोर्ट मैनेजमेंट डिपार्टमेंट में **असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मयंक दुबे** ने बताया- शहर के ट्रैफिक मैनेजमेंट को लेकर 4 चैलेंज हैं। इसके मुताबिक, पहला चौराहों के लिंक और जेमेट्री गड़बड़ डिजाइन का हैं। दूसरा शहर में मेट्रो आ रही है, ऐसे में बीआरटीएस की बसों के रूट को रीडिजाइन करना होगा, ताकि यह एक-दूसरे को कॉम्पलीमेंट कर सकें। रोड साइड अतिक्रमण हटे। शहर में पार्किंग को रेवेन्यू जनरेटिंग टूल की बजाय ट्रैफिक मैनेजमेंट टूल्स की तरह इस्तेमाल करना होगा। हैवी व्हीकल्स के लिए शहर में दिशात्मक टर्मिनल्स बनने चाहिए।

टाइम डिस्ट्रीब्यूशन से मिलेगी काफी मदद

एक्सपर्ट और मैनिट में एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ. सिद्धार्थ रोकड़े** ने बताया- ट्रैफिक लोड को मैनेज करने सिग्नल साइकिल ठीक होनी चाहिए। गवर्नमेंट ऑफिसों के क्लोजिंग टाइम को अलग-अलग टाइम स्लॉट में डिस्ट्रीब्यूट किया जा सकता है। इससे सारे लोग एक साथ सड़कों पर नहीं आएंगे।

बस रूट को री-डिजाइन करने की जरूरत

अर्बन एंड रीजनल प्लानिंग डिपार्टमेंट के **असिस्टेंट प्रो. गौरव वैद्य** ने कहा- अभी बीआरटीएस और मेट्रो रूट काफी हद तक सिमिलर हैं। ऐसे में बस रूट को रीडिजाइन करने की जरूरत है। इन्हें परपेंडिकुलर मोमेंट में रखने की तैयारी करनी चाहिए, ताकि यह दोनों एक-दूसरे को कॉम्पलीमेंट कर पाएं।